तालाब मे डूबी छह लडकियाँ

विष्णु नागर



प्रकाशक
प्रकाशन संस्थान
216 श्री राम नगर शाहदरा दिल्ली—110032

प्रथम संस्करण 1980
द्वितीय संस्करण 1980

मूल्य 15-00 रुपये

आवरण ज० स्वामीनाथन

मुद्रक तारा कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा
विकास आर्ट प्रिंटर्स, रामनगर शाहदरा दिल्ली 110032

डॉ० दुर्गाप्रसाद झाला

स्व० जयप्रकाश आय

श्रीराम जोशी

नरेन्द्र गौड

व्रजकिशोर शर्मा

को

शाजापुर के दिनो की स्मृति मे

क्रम

तालाब मे डूबी छह लडकियाँ

तालाब मे डूबी
छह लडकियाँ
जवान थी जवान
उनके भरे हुए स्तन थे
उनके शरीर को छूते
करण्ट दौड जाता था
वे गोल-मटोल
जादू की पुतलियाँ थी।

उन्हे मरे दो बरस हो जायेंगे।
पाँच और आठ और साठ
बरस हो जायेंगे।
भरी पूरी
जवान लडकियो की मौत की
एक शताब्दी बीत जायेगी।

ये लडकियाँ
ऐसे ही नही बीतने देंगी
ये शताब्दियाँ
कल ही किसी के
सपने मे नगी होकर आयेंगी
किसी के हाथ म
दे देंगी अपना हाथ

किसी की तरफ
आँखें उठाकर भी नहीं देखेंगी।
इस सर्दियों
इस हज़ार होकर आयेंगी
और तालाब में डूबते-डूबते
नाक में दम कर देंगी।
इस सर्दियों
चिड़िया बनकर आयेंगी
हरदम तिनके गिराती रहेंगी।
इन लड़कियों के मरने से
कोई यह न समझे
कि उन्हें इतनी जल्दी जीत लिया गया है।

महापण्डित

महापण्डित जो नही जानते, वह मैं जानता हूँ
मैं नही जानता महापण्डित क्या जानते हैं
और क्या क्या नही कहते, हम मूर्खो से
हमारी तादाद ज्यादा है
जबकि हमारे वस्त्र जल्दी मैले नही होते
और खुशी इस बात की कि
वे संग्रहालयो मे रखे जाने के काबिल नही रहते
जब हम उन्हे उतार फेंकते हैं।

महापण्डितो को याददाश्त के लिए
एक डायरी चाहिए
और एक कलम लिखने के लिए
एक बेंत टहलने के लिए
उन्हें आलापने को आजादी चाहिए
जमाना चाहिए सुनने को
आराम से बैठने के लिए तख्त चाहिए
चश्मा चाहिए देखने को, पान चबाने को चाहिए।
क्या क्या चाहिए महापण्डितो को, इसकी एक फेहरिस्त है
महापण्डितो को अश्वमेध यज्ञ करने के लिए समिधा चाहिए।
तिल तिल कर मरें लोग
डूबें लोग



उन्हें डूबने वालो की हँसती हुई तस्वीर चाहिए।

हम सब

हम सब जहाँ से होते हुए आयेंगे
वहाँ कुछ देर अपनी गठरियाँ रखेंगे
तम्बाकू खायेंगे।

हम जहाँ-जहाँ जायेंगे
गठरियाँ रखेंगे
तम्बाकू खायेंगे।

मैंने सोचा

मैंने सोचा तुम्हें बहुत भूख लगती होगी
और मैंने कुछ नहीं सोचा।

हवा में

हवा में उड़ गये उसके कपड़े
उड़ने दो, हवा में उड़े हैं।

इस बरस

अब हमें जाना जायेगा
बहुत पानी बरसा है
इस बरस
हमें भुला दिया जायेगा।

मौका

जिनावर बहुत थे कमरे में
मैंने कहा मारो
मारो कि यही मौका है
मारकर पछताने का।

लड़की ने नहाया

लड़की ने नहाया
और पाया, सब बरोबर है
नहाना भी, नहीं नहाना भी।

जब भी

जब भी हवा को कुछ कहना होता है
पंछी उड़ जाते हैं।

हर कविता

हर कविता
पेड से शुरू
होना चाहती है।

कवि
जबकि
बम्बई में है।

डालियों में

डालियां में
नहीं उसके
रहते हैं
पत्थर।

पेड़ से
कभी फल
कभी पत्थर टपकते हैं।

उसके सोने में है व्यथा

उसके सिरहाने
माँ बैठी है
उसके सोने में है व्यथा।

समय

धूप बजे मैं चला
हो गया लेट।
अँधेरे बजे मैं मरा
मैं मरा साढ़े छह बजे साहब ने बताया।

हरी चिड़िया का स्वप्न

मैं खींचता हूँ कई रेखाएँ
और मौत मुझसे डर जाती है
मैं चिड़िया बनाता हूँ
उसके पंखों में हरा रंग भरता हूँ



और पैरों में बांध देता हूँ—सम्पूर्ण पृथ्वी।

मौत को डर लगता है हाथों से,
रंगों से, आकृतियों से,
हरी चिड़िया के स्वप्न से।

समय

धूप बजे मैं चला
हो गया लेट ।
अँधेरे बजे मैं मरा।
मैं मरा साढ़े छह बजे साहब ने बताया ।

हरी चिडिया का स्वप्न

मैं खींचता हूँ कई रेखाएँ
और मौत मुझसे डर जाती है
मैं चिडिया बनाता हूँ
उसके पखो म हरा रग भरता हूँ



और पैरों मे बाँध देता हूँ—सम्पूण पृथ्वी।

मौत को डर लगता है हाथो से,
रगो से, आकृतियो स,
हरी चिडिया के स्वप्न स।

वक्त होता जा रहा है

वक्त होता जा रहा है
और स्कूल की घण्टी बर्रा रही है।

दरवाजे—कनर की टहनियो की तरह उदार
खुले हुए हैं।
बराहे के चारो तरफ, चौकोर
कनात तन रही है हम सब लडको की।
आओ मेरे यार, बहुत जोर से कसो मेरी हथेली
श्यामपट पर
चाक से लिखने के लिए
मुझसे अब अन्तिम उत्तर माँगा जायगा।

वक्त होता जा रहा है
और स्कूल की घण्टी बर्रा रही है।

युद्धभूमि

अब घोड़ो को
छोड़ देना चाहिए
युद्धभूमि
मनुष्यों के लिए।

वे लड़ें
या
आपस में
बाँट लें।

घोड़ो को
आचरण करना चाहिए
निराला
किसी यात्रा पर
निकल जाना चाहिए।

मैं अपना अंत नहीं देखता

यह, यहाँ मैं उग रहा हूँ
वनस्पतियों की तरह
अनजान
इस से उस सिरे तक
मैं अपना अंत नही देखता

हवा
और धूप
और पानी
का रस
उसकी शाश्वतता
मेरे साथ है।

हवा
और धूप
और पानी
बहता
उसकी नश्वरता
मेरे साथ है।

मैं अपना अंत नही देखता।

लडके की मौत

वह जवान लडके का बाप था
१८ साल मे लडका जवान हुआ था
और १८ साल वह बूढा नही होता।

वह जवान लडके का बाप
क्या नाराज नही था
अपने लडके से ?

जवान लडके की मौत का दिन था वह
आकाश साफ था, रात थी तारे थे
'समाचार' की खबरें
क्या थी उस दिन ।

और १८ साल वह लडका बूढा नही होता
एक लडकी से उसकी दोस्ती थी
वह उसे रूमाल देने वाली थी।
क्या काढ रही थी



वह रूमाल पर इतने दिन ।

जवान औरत

जवान औरत अधेड होना चाहती है
उस अधड होने पर
फासला देकर
दो बच्चे जनने है
वह नहीं जानती
मगर विज्ञापन जानता है
उसे एक लडका, एक लड़की होगी।
उसने दोनो के नाम
पति से मजूर करा लिये हैं
सस्कृत ने दिये हैं उसे य नाम।

यह तय है
कि उसका 'छोटा परिवार सुखी परिवार' होगा
उसके बच्चा का भविष्य सुखद होगा।

अपने बच्चो को अफसर बनता
देखने के लिए
जवान औरत बूढी होना चाहती है।

जवान औरत का बस चले
तो वह जवानी म ही बच्चे जन दे।

वह जवानी मे भी रोयेगा

वह जब रोता है
तो बच्चा होने से ही
दुखी नही लगता है।

वह जवानी मे भी रोयेगा—
आसू धोकर
तब किसी को जानने नही देगा
कि वह रोया था।

मैं फिर कहता हूँ चिडिया

चिडिया
मैं फिर कहता हूँ चिडिया
अपने घोसले से बडी है।
घोसले से बडी चिडिया का
अपना कोई मोह नही होता
वह दूसरे के चुगे दानो म
अपना त्याग बीनती है।

अन्तिम वक्ष

वह एक जगल थी
वृक्ष कटते जा रहे थे।

वह जान गयी
वह जगल नही रहेगी
वृक्ष कटते जा रहे थे।

वह अन्तिम वृक्ष हो गयी
वक्ष कटते जा रहे थे।

लडका

लडका निर्द्वंद्व सडक पार कर रहा है
वह मर जायेगा।

खेल के मैदान नही हैं और बम्बई मे
तो सडक को सडक न समझने के लिए
लडके की मुट्ठी मे पाँच पैसे है।

माँ

चलें
उड़ें
मां
पंख ये हैं।

फूलों से बने हैं पंख।

माँ तो उड़ती हैं सचमुच
पर
कितनी बिखरती हैं
पंखुड़ियाँ।

लडका

लडका निद्वद्व सडक पार कर रहा है
वह मर जायेगा।

खेल के मैदान नही हैं अ।र बम्बई मे
तो सडक को सडक न समझने के लिए
लडके की मुटठी म पाच पैस है।

माँ

चलें
उड़ें
माँ
पंख ये हैं।

फूलों से बने हैं पंख।

माँ तो उड़ती हैं सचमुच
पर
कितनी बिखरती हैं
पंखुड़ियाँ।

दूसरे हथियार चुप थे

वह हथियारों का सेवक था
हथियारों के मुंह
हत्या के लिए
झुके रहते थे पृथ्वी पर।

रोजाना की तरह
वह बन्दूक साफ कर रहा था
और बन्दूक ने उसे
औचक मार डाला।

दूसरे हथियार चुप थे।

वक्त

दस कदम दूर से ही
वह पहचान लिया जाता है
दस कदम और चलेगा
कि उसे गोली मार दी जायेगी।

दुनिया देखने की फुर्सत उसके पास थी
उसके पास वक्त था किताबें पढ़ने का
पैसा था उन पर खर्च करने का।

दस कदम और उसे चलना है

देखने का इतना वक्त भी
देख लो
उसके लिए कम नहीं है।

लडकी

घूरकर देखता है लडका
लडकी जवान हो रही है
सोच कर देखता है लडका
लडकी आसमान हो रही है।

डाली-डाली

डाली
डाली
फूल हैं।

पौधा
अभी
गुम है।

पौधा
अभी
गुम है जो
पौधा अभी
गुम है।

घर

दूर
दूर हैं
घर।

बहुत पास
बहुत पास
मगर
उनकी परछाइया।

दर्पण

मैंने दर्पण में देखी कविता
जिसमें लोग देखते थे
अपने को प्रसन्न और सुन्दर।

दरअसल वह उनकी ऊब थी।

उधर मेरी बच्ची है

देवता जिधर दौड रहे हैं
उधर मेरी बच्ची है
कुचल,न जाये
मेरी बच्ची
वह धूल के रग मे रगी है |

हरी पहाड़

बरसात मे पहाड हरा था
रात मे भी हरा
बुरे दिन आ गये है रात के।

शिव

कोई खेती मे नही लगा
सिलावट का इकलौता बेटा शिव
लोहे लगड़ का ठेला खीचने लगा।

यह मेरे लगोटिया यार की कहानी है
शिव को मैंने दो आने किलो मे
पुराना लोहा बेचा
बदले मे उसे पहचाना नही।

वह पहले की तरह
चार आने किलो में
लोहा नही खरीदता।

मुझे पूरे एक रुपये का घाटा हुआ है
मैं इसे कभी नही भूलूगा
यह लोहा मेरे घर म दो पीढियो से जमा हो रहा था।

बीस बरस से शिव याद नही आया था
और बीस बरस याद नही आयगा—
जब मैं औसत भारतीय की उम्र म मरूँगा।
लोहा तब तक जमा होगा
शिव की याद फिर की जायगी।

शिव
तुम्हारी याद का यह कैसा बहाना है!

सोहन-मोहन

सोहन झूठा
यद्यपि मोहन सच्चा है।
मोहन सच्चा किसी की जेब खाली नही करवाता।

सच्चा मोहन
झूठे मोहन को बताता है
कि झूठा सोहन, सच्चा मोहन नही बन सकता।
'यार इसी बात पर बीडी पिलाओ'—
झूठा मोहन, सच्चे मोहन से
सग आकर कहता है।
सच्चा मोहन, बीडी नही पिलाता
सच्चे मोहनो की जेब म
बीडी नही हुआ करती।

फलें

हम फल हैं
पेड़ से टपकते हैं।

तोते हमें खाते हैं
मीठा बनाते हैं।

आदमी खाते हैं
मुक्ति दिलाते हैं।

हम फल हैं
सड़ने से डरते हैं।

झण्डा-गीत

श्यामलाल गुप्त पार्षद का झण्डा गीत
चौक पर गाया गया।
अतिथिगण चुप थे
जनता गा रही थी।
जाने-जाने को हुए जब मंत्री
तो पार्षदजी की पीठ थपथपा गये।

वर्षा का पानी चूँकि कृषि को भी
बहुत फायदा पहुँचाता है
इसलिए मंत्री जब मंच से उतरे
तो इस दृश्य से विगलित हो
बादल बरस पड़े।
सभा तो विसर्जित हो चुकी थी
मन्त्री जरा-जरा भीग
और कार से फुर हो गये।

बादल ने सोचा बरसना भी काव्य है।

रात

रात थी
वह जगल म अकेली थी
वह अखबार नही पढती थी
वह समझती थी जगल मे शेर रहते हैं।

सो उस शेर से डर लग रहा था
वह अकेली रो रही थी।

उसके शत्रु जान रहे थे
वह शेर से डरकर रो रही है
उन्होने उसे रोने दिया।

भोर होते होते वह जगल से भाग गयी
उसने जगल न जाने की कसम खायी
'जगल मे तो जाने कब रात हो जाती है'।
उसे अपने शत्रुओ का आभास नही था
वह डर रही थी
जगल मे तो जाने कब रात हो जाती है।

क्षमा कीजिए

यह कविता नहीं रही
क्षमा कीजिये यह मैं आप ही में ही कह रहा हूँ
यह दरख्त है अब।

सोचिये, दरख्त को दिखाकर कोई क्या कहेगा
सिवाय दरख्त दिखाने के।
कोई कहेगा
लो, १९७२ में एक आदमी दरख्त देखने को कह रहा था
तो मैं कहूँगा भाई, मकान देखो मकान
कि मकान में हवा नहीं घुसती
फिर भी वह एक अदद मकान है।

दरख्त भी है एक
पत्ते जिसके
हवा से लगातार हिलते हैं।

साबुन

हत्यारा नहा रहा था
कि साबुन उसकी आँखों में घुस गया।

हत्यारे ने साबुन फेंक दिया
साबुन मरनेवाली चीज नहीं थी ए
हत्यारा गया और दुकानदार को मार लाया,

हत्यारे के खून के हाथ साबुन ने धोये।

साबुन हत्यारे को भाने लगा
साबुन अपनी जगह
बनाने लगा।

छोटा लड़का

सड़क बड़ी थी
लड़का छोटा

लड़का छोटा जो था
पट्ठे ने आसमान तक
सड़क बना ली !

कोई कायदा छूट नहीं देता
कि लड़का
आसमान तक सड़क बना ले ।

लड़का छोटा ही था
कायदा उस पर चलता नहीं था ।

कायदे ने लड़के को बड़ा होने दिया
फिर कायदे से उसे मार दिया ।

जिरह में

जिरह में
पूरे पचास आदमी एक थे
और दस आदमी एक
भाई एक-एक नहीं था।

फ़ैसले के दिन
दस भी पचास के पीछे हो लिये।
फ़ैसला क्या करते वे —
जो पूरे साठ थे।

उन्होंने क्षमा किया, दया की, घुड़की दी
अन्त में वे ऊबे।

क्या समझें किसी को वे—
वे तो पूरे साठ थे।

पेड

जैसे ही मैं एक पेड के पास गया
पेड अपने आप में चुप लगा।

मैं कह ही रहा था
कि पेड बहुत कट रहे हैं
और पेड थे कि खिलखिला उठे।

दया से चिढ़े हुए हैं पेड
हवा न भी बहे तो खिलखिलाते हैं।

माखन



माखन
सिय रे तरे गांव म—
गाय नही
भैंसें नही।

हम तेरे गांव मे—
फूल नही
पत्ती नही।

हम तेरे घर मे—
पत्नी नही
बच्चे नही।

शायद कहीं, कि
हम तेरे स्वप्न मे भी।

जंगल ही क्यों नहीं हैं

बायें चलने को कहा गया है
इसके मायने यह हैं
कि आप सडक पर हैं
जगल मे नही
और सडक पर खतरा है।

समझ जाइए अब
कोई कायदा क्या नही है जगल में।

और सबसे बडी बात कि
जगल ही क्यो नही हैं।

बरस रहा है पानी

पानी कहाँ कहाँ बरस रहा है
आँगन म, घर म, आत्मा म।

मरी छोटी सी बिटिया झूम कर नहा रही है
उसके बालों से पानी चू रहा है
उसकी नाक पर से पानी चू रहा है
उसकी ठोडी से पानी चू रहा है
वह आत्मा तक नहा गयी है।

पानी मेरी स्त्री की भी आँखों,
नथुनों, ओठों, कानों पर जी गया है।

पानी दिन म, रात मे बरस रहा है।

तुम्हारा यह खेल

मेरे ईश्वर
तुम्हारा यह खेल



मुझसे खेला न जायगा।
कहीं घोड़े रखेंगे
कहीं हाथी
कहीं ऊँट
कहीं पदल
शब्द कहीं नहीं रखेंगे।

साहस

मैं हूँ
तुम्हारी
सबसे कीमती चीज——साहस।

वह आदमी
दल-दल से
निकल रहा था
डूब गया।
मैं उसी का
स्मारक हूँ।

सुलेमान

अब हमारा ही देश देखो
उसमें सबके लिए कपड़े नहीं
मगर सबके लिए दर्ज़ी हैं।

पड़ोस का सुलेमान
जा सकता है
कालू दर्ज़ी के पास,
नहीं तो अपने ही नाम के दर्ज़ी के पास।

दर्ज़ियों की कमी नहीं है।

सुलेमान को हक़ है
दूसरे सुलेमान के पास जाने का
उससे अपने कपड़े सिलवाने का।

पर सुलेमान क्या पागल है ?
क्या उसे आदत है
कपड़े पहनने की
सुलेमान भूखा है भूखा
चाहे दर्ज़ी हो सुलेमान कोई।

अपना आदमी

मोटा घर घिसा हुआ जूता पहने
यह आदमी अपना है।
इसके घर जाने की जरूरत नहीं
यह खुद जहाँ कहो वहाँ मिलेगा।
दौड़ता आता सड़क दर सड़क
बसों से, कारों से, ट्रकों से बचकर।

तीनों लोक की खबर देता
यह आदमी
छिला हुआ अण्डा है बेचारा
इसे गड़प गड़प खा जाओ।

रिआया

जूनागढ रियासत का एक दीवान
पटाखे चलाता हुआ दीखता है
रिआया हर्ष व्यक्त करती है।

जूनागढ रियासत का वही दीवान
बन्दूक तानता दीखता है
रिआया हर्ष व्यक्त करती है।

काम दिया रिआया को हर्ष व्यक्त करने का
काम दिया रिआया को गम ओढ़ने का।

पहाड़

तब मेरे लिए पहाड़ परिचित नहीं थे
तब मुझे पहाड़ों की रात की
कल्पना भी नहीं थी।
फिर भी मैं दुखी था—पहाड़ों के लिए।

पहाड़ अब मेरे अनकरीब हैं
मगर उनसे टकराते बादल नहीं हैं।

अब मैं बादलों में अपना सर
डुबाना चाहता हूँ
और पहाड़ों पर रात का होना
भूल गया हूँ।

इतना वक्त

रामलाल हँसते हँसते रुक गया
रामलाल हँसने से डरा
रामलाल हँसने से कभी नहीं डरा था।

रामलाल से भूल हुई
रामलाल को हँसने से
डरने में इतना वक्त लग गया।

इतना वक्त
आदमी को
बना देता है
हरा भरा पेड़
उसकी डालों पर
झलने लगते हैं पछी
इतना वक्त
पेड़ को बना देता है
विश्वसनीय।

रामलाल हँसने से कब तक डरा रह सकता है।

यह कविता

पूर्ण है यह कविता और पूरा हूँ मैं /
मेरे बन्धु/मेरे आत्मज/मेरे पिता/
पूर्ण है कविता में मेरे साले का दफ्तर
पूर्ण है।

पूर्ण है पुष्प जैसी, पूर्ण जैसी, शाखा जैसी
यह लड़की
पूर्ण है इसका टिमटिमाता प्यार।
पूर्ण है सौन्दर्य साबुन
उसमें नहाने वाला मैं / मेरी बीवी / मेरे बच्चे /
मेरा देश महान।

पूर्ण है धर्मेन्द्र के साथ कमर लचकाती
आती
अभिनेत्री
जो सपने में मरी होगी।

पूर्ण ही पूर्ण है मेरी मार खायी हुई हँसी
जो तुम्हारी हँसी की प्रतीक्षा करती है।

हुजूर

हुजूर चले पाँव-पाँव
उनका घोड़ा शरमा गया
उनके चाकर अवाक रह गये
उनकी पत्नी को विषाद हुआ।

चलते चलते हुजूर को मालूम हुआ
उनकी चाल में नुक्स है
हुजूर को मालूम हुआ
उनकी पतलून ठीक नहीं सिली है।
हुजूर को मालूम हुआ
हुजूर का पैदल चलना
लोगों को मालूम है।

हुजूर ने सोचा
अब वे रोज रोज पैदल चलेंगे
हुजूर हुजूर नहीं रहेंगे
हुजूर खजूर भी खायेंगे।
हुजूर ने फैसला लागू किया
हुजूर ने चाल ठीक की
हुजूर ने नयी पैंट सिलवायी।

हुजूर तब्दीली चाहने लगे
जैसे पतलून के बजाय पायजामा
पायजामे की बजाय धोती।

हुजूर एक दिन रोते पाये गये
हुजूर को सांत्वना मिली कि
हुजूर का घोड़ा भी रो रहा था
हुजूर के चाकर भी रो रहे थे
हुजूर की पत्नी भी रो रही थी।

उनके फूल

उनके फूल हमारे फूलो स ज्यादा वडे हैं मोहक है
उनके फूल हमारी वातचीत का विषय हैं
हालांकि हम उनके फूलो को तोडते नही।

उनके फल समय पर फूलदानो म सज जाते हैं
फूलदानो से हट जात हैं।
फूलदानो के वारे मे हमारी राय अच्छी है
वेशकीमती फूलदानो को हम हिलाते भी नही
फूलो के वारे म भी हम नेक इरादे रखते हैं
उन्हे सूघते है तो उन्हे देखते हैं तो
कि एक दिन फिर हम फूलो के वारे म
सोचने का साहस करेंगे।

उनके फूल हमारे फूलों को बुलाते हैं, आओ
एवज म हमारे फल शरमाकर हँस दते हैं
हमारे फूलो को मुस्कुराने की ~~[illegible]~~ तकनीक नही आती।

कैसे हैं हमारे फल मौसम का ज्ञान भी नही रखते
कभी भी खिल जात हैं कभी भी मुरझा जाते हैं
न जान कब तक डालो पर सदे रहते है।

हमारे फूलो के वारे में प्रसिद्ध है कि वे बिक जात हैं
हमारे फूल तितलियो से पराग ले जान का मना
करते हैं।

हमारे फूल अविनत हैं
हमारे फूल हैं कि हमारे फूल वने रहत हैं।

वह बहुत दूर

वह बहुत दूर है
कहीं से भी बहुत दूर
मगर यहीं पर।

वह दूर ही दूर
होती जायगी
इसी पृथ्वी पर
इसी आकाश में।

उसके घर का पंखा ठण्डा होगा
इसी धूप में
ठण्ड लगने पर बैठी होगी वह
इसी धूप में।

वह बहुत दूर है
कहीं से भी बहुत दूर।

दयाराम वा

जब दयाराम वा के दाहिने पर का जूता खो जाता
तो वह इन्दिरा गांधी का गाली दने लगते
उन्हें पता नहीं इन्दिरा गांधी देश की
प्रधानमन्त्री हैं



और उन्होंने तो क्या, उनकी सात पुश्तों ने भी
जूते जसी छोटी चीज चुराने का काम
क्या किया होगा।
बार बार कोई क्या गाली दे
इसलिए व नगे पर ही घूमने लगे।
उन्होंने सोचा
अब मेरा कोई क्या उखाड़ लेगा
मेरे पर मे जूता ही नहीं है,
काइ पर ता काटकर नहीं ही ले जायगा।

यह सोचते हैं कि दखते देखते
उनकी टोपी उड़कर आम की डाल पर बैठ जाती है
और कूकने लगती है
'दयाराम वा, दयाराम वा
नंगे रहो और करो मजा'
फिर कुर्ता उड़ जाता है
धोती भी नहीं ठहरती और उड़ जाती है।
अब तो दयाराम वा को शर्म ही आ जाती है

क्या करें, क्या न करें सोच मे न पड कर
वे सार्वजनिक शौचालय मे घुस जाते हैं।

कोई कोई सोचता है कि नंगे आदमी के
सार्वजनिक शौचालय मे
घुस जाने के पीछे भी षडयन्त्र है।

षडयन्त्र को पुलिस नही दबा सकती
इसलिए सेना आती है
और सेना भी बडी मजेदार
पूछो पानी की तो दनाक से गोली मार दे।

आखिर दयाराम वा भी मारे गये
मगर पछतावा हुआ बेचारी सेना को
क्यो बुलाया, क्यो बुलाया सेना को
अगर एक ही आदमी को मारना था।

वह

वह कपडे धोने के साबुन से नहाता है
उसी से कपडे धोता है
किसी को इससे क्या आपत्ति है ?
लेकिन है
दुनिया म ऐसे लोग भी हैं
जिन्हे आपत्ति है।

आपत्ति हो तो हो
ठीक है
वह नही पियेगा मशीन का ठडा पानी
प्याऊ का पियेगा
वह आसमान देखेगा
जमीन म चमकती चीज को
उठायेगा उसे परखेगा।
उसे हवलदार का टोप
दिखाई देगा तो
आगे चलकर
वह गदन झटका देगा।
वह गली-गली मे चलेगा
सडक पर नहीं आयगा।

यह कपड़े धोने का साबुन भी
छोड़ देगा।
वह दिवाला पिटवा देगा
एक दिन
साबुन की,
तेल की,
इत्र-फुलेल की कंपनियों का।

मारकर देखो
उस आदमी को
किस फुर्ती से
मुड़ गया
वह दूसरी गली में।

चाँद पर

मैं अपनी मर्जी से चाँद पर गया
अपनी ही मर्जी से लौट आया
अपनी ही मर्जी से फूलमालाएँ पहनीं
और फिर पत्रकार बन बैठा।

चाँद पर फुरसत मिली
तो कान का मैल निकाला।

सबने कहा
चाँद पर गये
और कान का मैल निकालने बैठ गये
छि छि छि !

मैं अपनी मर्जी से चाँद पर गया
मर्जी से यहाँ आया
मर्जी से सारे काम करता हूँ
मेरी मर्जी चाँद पर
कान का मैल निकालने की हुई तो निकाला
मेरी मर्जी हो तो चाँद की मिट्टी के टुकड़े
लाऊँ
न लाऊँ
मेरी मर्जी हो तो चाँद से पृथ्वी के लिए
बोलूँ
न बोलूँ

हिलता डुलता हूं तो अपने लिए
गाऊँ तो सुनो
न गाऊँ तो मक्खी मारो।
सब कहते हैं चांद पर गया
तो पृथ्वी के लिए लेता आता कुछ!
अरे मैं मर्जी से चांद पर गया था
नहीं लाया कुछ!
कर्णसा मैल ही निकाला
कुछ किया तो
कुछ करता तो हूँ
चांद पर भी गया तो कुछ किया।
पृथ्वी पर ही कितने लोग
कान का मैल निकालते हैं।
मैंने चांद पर किया तो बुरा किया क्या?

कोई नहीं है

हमने बेहिसाब लोगो से बेहिसाब तक किये
और अब हम लौट रहे हैं
घरों में
जिनमे फिर सीढियाँ हैं
जूता, जूते की जगह
किताबें, किताबो की जगह हैं।

कोई नही है, इन चीजो को छून,
छेडने वाला।

मर गये वे

मर गये वे
जसे बाप मरे थे
जैसे बाप के मरने से दुनिया का कारोबार
बदस्तूर रहा था
झंडा झुकाने की नौबत नहीं आयी थी।
मर गये तो जसे किसी ने कहा
आदमी मर जाने के लिए बना है।
मरे तो
कम से कम
अपने बिस्तर पर मरते
लेकिन कुत्ते की मौत मरे सड़क पर
और वह भी दिल्ली की
और वह भी दिसम्बर में !

दुश्मन

उस आदमी ने रोटी के लिए
साइकिल चलायी
उसने साइकिल रोकी, धीमी की
घण्टी बजाई
वह घर पहुँच गया।

उसने साइकिल रोकी, धीमी की
रफ्तार से चलायी, घण्टी बजायी
वह काम पर पहुँच गया।
उसने दोनों ही बार
लोगों, लालबत्तियों कुत्तों, हाथ ठेलों,
बसों, बिजली के खंभों को देखा—
इतना देखा कि घर और दफ्तर
पहुँच गया।



वह ऐसा वह रोटी के लिए नहीं भीकता
वह दफ्तर नहीं जाता, घर नहीं पहुँचता
वह बाजार में नहीं दीखता
उसे गुजरात प्रधानमन्त्री भुखमरी
मानसून महामारी एटम बम तीसरी दुनिया
मार्क्स
सबकी खबर है
और किसी से डर नहीं है।

उसे तुम किसी दु ख से दु खी
नही कर सकते ।
फिर भी वह सबका है
सबके साथ होता है' ।
उस शपथ ग्रहण सामारोह के बाद शोक सभा मे
शोकसभा के बाद कार्यकारिणी परिषद की बैठक मे
बैठक के बाद अदालत म
अदालत क बाद परिहास मे
ल दन म, स्वप्न मे
वह जहाँ चाहे, उसे देखोगे ।
उसकी कार को गुजरता हुआ देखोगे
देखोगे कि उसमे वह नही उसका शोफर है
उसके कपडे सिलते हुए नही देखोगे
उसके लिए कपडे बिकते हुए नही देखोगे ।



वह कही रुकता नही
(वह साइकिलवाले आदमी की तरह नही है)
मगर वह तुम्हारा नाम जानता है
एक दिन तुम चकित रह जाते हो
कि वह —वही तुम्हारे घर आया ।
तुम्हारे बच्चे मिठाई लेने दौडे
बर्फ लेने, पान लेने दौडे
और वे आते कि
तुम्हारा मेहमान चला गया २(५)
उसने पानी भी नही पिया (५४)
सौंफ भी नही खाई

फिर तुमने मन खाया, मिठाई खाई,
शरबत पिया,
बच्चों की किलकार सुनी
और उस रात तुम खूब रोये

□

वह साइकिलवाला से अलग है
उसकी पत्नी शाम को कपड़े समेटते हुए
नहीं कहती, चलो शाम हुई, रोटी बनायें।

□

वह साइकिलवाला से अलग है
वह सड़क पर चलने वाला से अलग है
वह सरकार से अलग है
वह हरिजनों की हिंसा में
'छोटे मोटे' मामों म नहीं पड़ता।
वह हर उस बात के पक्ष म
बयान देता है
जिसके पक्ष में तुम लड़ रहे हो
तुम किसी भूमिया को बचाना चाहते हो
और 'व्यक्तिगत हिंसा' के विरोध म हो
वह तुम्हारे साथ है
वह अदालत मे मन्त्री और सेठ का है
मंच पर तुम्हारा है।

□

वह जयप्रकाश का समर्थक है
वह इन्दिरा गांधी से बचाता है
वह सर्वोच्च न्यायालय की सत्ता पर
आँच नहीं आने देना चाहता।

□

वह भूख गरीबी जलावत गांधी र
विकल्प सुझाता है

उस तुम हिंसा की किसी वारदात में
फँसा हुआ नहीं पाओगे
उसे तुम किसी अदालत में दोषी
नहीं पाओगे
वह विरोध का कारण नहीं है
वह प्रगति के हर मार्ग पर अगुआ है
उसने हर सत्ता
और हर विपक्ष के लिए
अपने को जरूरी बना लिया है।
उस पर ऊंगली उठाने वाला
किसी जनतन्त्र में पैदा नहीं होता।
वह साइकिलवाले, पुलिस, सेठ सम्पादक
सरकार, तस्कर, नक्सलवादी
सबके पक्ष में है
और सबको धता बता रहा है।
उसे मारने के लिए जमींदारों को
शस्त्र नहीं दिये जाते
पुलिस की मदद नहीं ली जाती।
वह किसी का नायक नहीं है
वह किसी के अध्ययन का विषय नहीं है
वह हम आलू के परौंठे की तरह खा रहा है
कोकाकोला की तरह पी रहा है
उसे किस तर्क से बताऊं कि वह
मेरा दुश्मन है
जब कि वह मेरा दुश्मन है।

देह

हमारी देह बढ़ती जाती है
हमारी देह बरगद हो जायेगी
तो रात को उधर से गुजरते से बच्चे डरेंगे।

हमारी देह का स्वाद कैसा होगा !
कैसा होगा हम तो नहीं जानते
क्या वह दूसरों से अभिन्न नहीं होगा ?
हमारी देह बरगद हो जायेगी
कड़ुवी होगी तब
और ज्यादा बोलेगी।

उस देह में आत्मा नहीं होगी
वह होगी दूसरों में
जिनकी बातों से वह डरेगी
वह होगी भारी
रासलीला नहीं करेगी।
वह सम्मोहित करेगी !
दूसरों की देह का स्पन्दन
जानेगा वह।

अपनी देह पर
सोचते सोचते हम
अपनी देह को पुरस्कृत करते जाते हैं।
कोई पूछता नहीं हमारी देह के बारे में
जो अक्षरश हमारी है

जो बरगद होगी
बच्चे डरेंगे जिसे देखकर।

सुवासित हमारी देह कोई सूंघता नही
वहां रोपें इस देह को जो बरगद होगी।
बरगद नही होगी इस तरह



हमारी देह
दूसरा से छुई नही जाती व—
वह बरगद नही होगी।

राजा की सवारी

झटपट नहा
कपड़े बदल
राजा की सवारी आयगी।

कान रख बन्द
आँखें खोल
राजा भाषण करेंगे

फुर्ती से उठ
चूतड़ झाड़
राजा प्रस्थान करेंगे।

सबसे कह
सबसे झगड़
राजा अच्छा बोले।

एक कमरा

एक कमरा
एक घर है
और क्या हुआ कि
एक कमरे को
पूरा घर होना पड रहा है।

और घर मे
यह नही है, वह नही है
यहा तक की बच्चा भी
अभी घर मे नही है।

यह घर
बहुत से घरो के बीच है
और बिल्कुल नजदीक है
यहाँ से।

बहिन

फिर क्या होता है ?
फिर मेरी बहिन घर से भाग जाती है
न लौटने वाली बहिन मेरी नहीं थी

वह लौटी ही
घर का झाड़ा-बुहारा

इस बार बुहारने में
वह विकलता नहीं थी, जो थी।
उसने आटे के डिब्बे को
दाल के डिब्बे के पास रखा
उसने डिब्बे खोलकर नहीं देखा
कि उनमें कितना आटा दाल है।

बहुत हुआ तो उसने छोटू को
स्कूल के लिए
तैयार करते समय
पहले की तरह हल्की चपत लगा दी

क्या छोटू इस व्यापार को
समझते हुए
स्कूल गया ?

मैं अपनी बीस बरस पुरानी
स्मृतियों में लौटता हुआ
कहता हूँ, हाँ
कहता हूँ नहीं, अभी जब उसे
उछलता हुआ जाता हूँ।

न लौटने वाली चहिल मेरी नहीं थी
वह होती
वह होती जरूर।

भाई की चिटठी

भाई ने लिखी चिटठी,
लिखा आना
आना कि इस बार
बहिन भी आ रही है
आना तो खूब मजा रहेगा।
गाँव से भाई कह आना
तो मैं क्यों न जाऊँ

मैं आऊँगा भाई
सोचना मत कि कैसे आऊँगा!
८०० मील दूरी भी
बीडी पीते पार हो जायेगी
बीडी फिर भी न होगी खत्म